योनि मिली है जो प्रायः चेतनाशून्य है। धूमिल दर्पण पशु-पक्षियों के तुल्य है तथा धूम्र से आच्छादित अग्नि मनुष्य से तुलनीय है। मानव देह में ही जीवात्मा अपनी कृष्णभावना का पुनः उन्मेष कर सकता है। इसके अधिक प्रगति करने पर भगवद्भक्ति रूपिणी अग्नि सम्पूर्ण मानव समाज में प्रोज्ज्वलित की जा सकती है। यदि उस अग्नि से निकले धूम्र का भलीभाँति नियन्त्रण किया जाय तो वह प्रचण्ड हो उठेगी। इस प्रकार मानव देह जीवात्मा के लिए भवबन्धन से मोक्ष-प्राप्ति का अन्यतम अवसर है। इस मानव देह में ही सद्गुरु के आश्रय में कृष्णभावना का सेवन करने से कामरूपी दुर्जेय शत्रु को विजय किया जा सकता है।

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।।३९।।

आवृतम्=आच्छन्न है; **ज्ञानम्**=शुद्ध चेतना; **एतेन**=इस; **ज्ञानिनः**=ज्ञानियों के; **नित्य वैरिणा**=नित्य शत्रु द्वारा; **कामरूपेण**=कामरूपी; **कौन्तेय**=हे कुन्तीपुत्र अर्जुन; **दुष्पूरेण**=सदा अतृप्त रहने वाले; **अनलेन**=अग्नि के समान; **च**=भी।

अनुवाद

इस प्रकार मनुष्य की शुद्ध चेतना उसके नित्य वैरी, इस काम से ढकी हुई है, जो सदा अतृप्त अग्नि के समान प्रचण्ड रहता है।।३९।।

तात्पर्य

मनुस्मृति में उल्लेख है कि कितना भी विषयभोग क्यों न किया जाय, पर काम की तृप्ति नहीं हो सकती, उसी प्रकार जैसे निरन्तर ईंधन डालते रहने से अग्नि को शांत नहीं किया जा सकता। इस प्राकृत-जगत् में सम्पूर्ण कार्य-कलापों का केन्द्रविन्दु काम ही है। अतएव इस जगत् को 'मैथुन्यागार' कहा गया है। सामान्य कारागार में बन्दी को सलाखों के भीतर रखा जाता है। इसी प्रकार श्रीभगवान् की अवज्ञा करने वाले अपराधियों को मैथुनिक-जीवन में बाँधा जाता है। प्राकृत सभ्यता द्वारा इन्द्रियतृप्ति के साधनों में उन्नति करने का अर्थ जीवात्मा के भवरोग की अवधि को बढ़ाना है। अतः यह उस अज्ञान का चिह्न है, जिससे जीवात्मा संसार में बँधा रहता है। इन्द्रियतृप्ति करते हुए सुख की तुच्छ अनुभूति हो सकती है; परन्तु वास्तव में तो इस प्रकार का नाममात्र का सुख अन्तिम परिणाम में विषयी का परम शत्रु ही सिद्ध होता है।

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्।।४०।।

इन्द्रियाणि=इन्द्रियाँ; **मनः**=मन; **बुद्धिः**=बुद्धि; **अस्य**=काम के; **अधिष्ठानम्**=निवास; **उच्यते**=कहे गये हैं; **एतैः**=इन सबके द्वारा; **विमोहयति**=मोहित करता है; **एषः**=यह; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **आवृत्य**=ढककर; **देहिनम्**=देहबद्ध आत्मा का।